अण्डी (अरण्ड)

अण्डी की खेती तराई क्षेत्र के पीलीभीत, खीरी, सीतापुर, बहराइच, श्रावस्ती, संत कबीरनगर, डा. गोरखपुर जनपदों व बुन्देलखण्ड क्षेत्र तथा कानपुर, इलाहाबाद एवं आगरा जनपदों में शुद्ध तथा मिश्रित रूप में की जाती है। इसकी खेती मक्का और ज्वार के साथ तथा खेत की मेड़ों पर की जाती है।

1. उन्नतिशील प्रजातियां :

प्रजाति	बोने का उपयुक्त समय	अवधि(दिनों में)	उपज (कु./हे.)	उपयुक्त क्षेत्र
टा–3	सितम्बर में बोने पर	180	11–14	तराई क्षेत्र
टा–4				तदैव
कालपी–8	जुलाई में बोने पर	240	12–14	बुन्देलखण्ड हेतु

जलोढ़ तथा तराई क्षेत्र के लिए टा–3 एवं 4 प्रजाति उपयुक्त हैं, जो जुलाई में बोकर 240–245 दिनों में एवं सितम्बर में बोने पर 180 दिन मे पक कर तैयार हो जाती हैं। टा–3 का तना हरा, अधिक शाखा युक्त तथा फल चटकने वाले होते हैं।

2. बीज दर :

प्रति हेक्टर 15 कि.ग्रा. बीज का प्रयोग करना चाहिए।

3. बुवाई का समय व विधिः

वर्षा होने पर बुवाई करें। बोने का उचित समय 15 जुलाई से 15 अगस्त अन्त तक एवं सितम्बर माह है।

4. संतुलित उर्वरकों का प्रयोगः

नत्रजन 50 कि.ग्रा. एवं फास्फोरस 25 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से प्रयोग करें। राकड़ तथा मूड़ भूमि में 15 कि.ग्रा. प्रति हे. पोटाष भी डालें।

5. निकाई–गुड़ाई

बुवाई के तीन सप्ताह बाद पहली निकाई गुड़ाई करके पौधों की आपस की दूरी ठीक कर लें।

6. सिंचाईः

जहां पर सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, वहां आवष्यकतानुसार सिंचाई की जा सकती है।

7. कीट एवं रोग नियन्त्रण :

1. केस्टर सेमीलूपर :

पहचानः इस कीट की सूंड़ियां सलेटी काले रंग की होती है जो पत्ती खाकर नुकसान पहुंचाती है।

उपचारः

- क्यूनालफास 1.5 लीटर या
- मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिषत 25 कि.ग्रा. या
- डी.डी.वी.पी. 76 प्रतिषत 500 मि.लीटर।

2. अण्डी की बीजांकुरः

पहचानः इस रोग में पत्तियों पर गोलाकार हल्के रंग के धब्बे बनते हैं जो क्रमषः बढ़कर बड़े हो जाते हैं और पत्तियां सूख जाती हैं।

पत्तियों का धब्बेदार रोगः

पहचानः इस रोग में पत्तियों पर छोटे–छोटे काले या कत्थई रंग के धब्बे बनते हैं।

उपचारः इस रोग की रोकथाम हेतु 2 कि.ग्रा. जिंक मैंगनीज कार्बामेट अथवा जीरम 80 प्रतिषत घुलनषील चूर्ण के 2 कि.ग्रा. अथवा जीरम 27 प्रतिषत के 3.00 लीटर का छिड़काव प्रति हे. करना चाहिए।

मुख्य बिन्दु :

बुवाई 10–20 जुलाई तक अवष्य कर ली जाये।